

शिक्षा

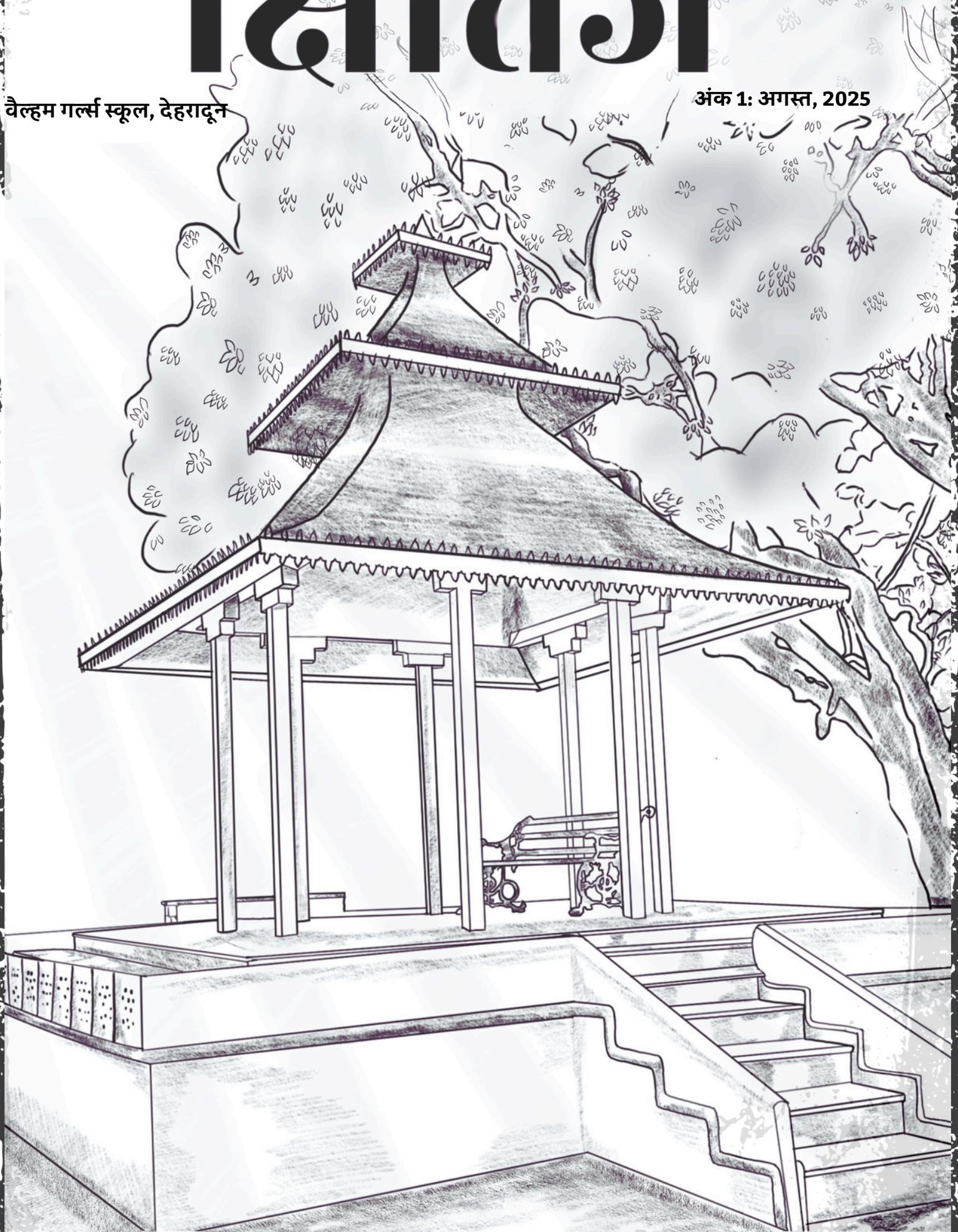


आर्त शान्तिः फला विद्या

“आर्त शान्ति फला विद्या”

वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून

अंक 1: अगस्त, 2025



सम्पादिका की कलम से

प्रिय पाठकों,

“विद्यालय में मेरा यह अंतिम वर्ष है।” यह विचार हर बार मेरे मन को विचलित सा कर देता है। यह वर्ष केवल ग्यारह कक्षा से बारहवी कक्षा में आने का नहीं है अपितु यह जीवन की अगली कठिन परीक्षा के लिए स्वयं को तैयार करने का अवसर भी है। उससे भी अधिक, यह उन अद्भुत और सुनहरी स्मृतियों को सहेजने का समय है, जिन्हें हम बचपन से जीते आए हैं। अब जब विद्यालय का प्रत्येक कोना, प्रत्येक कक्ष, हर घंटी की टनटनाहट आत्मीय सी लगने लगी है, तब यही समय सुनहरे पंख लगाकर भागता हुआ सा प्रतीत होने लगा है। इन दिनों की यादें कभी किसी तस्वीर में सजीव हो उठती हैं, तो कभी किसी भूले-बिसरे किस्से में मुस्कुरा देती हैं।

इन्हीं भावनाओं को संजोने और सजीव करने का माध्यम बनी है यह ‘क्षितिज’। मेरे लिए क्षितिज मात्र एक प्रकाशन ही नहीं है, अपितु मेरे साथियों और मेरे सपनों, विचारों और भावनाओं की एक सामूहिक उड़ान है।

इस विशेषांक में जहाँ एक ओर सकारात्मकता और सृजनशीलता से युक्त रचनाएँ संकलित हैं, वहीं दूसरी ओर उन अव्यक्त अनुभूतियों की भी झलक है जिन्हें हम सबने यदा-कदा अनुभव तो किया है किन्तु व्यक्त नहीं किया।

‘क्षितिज’ मात्र लेखों और कविताओं का संग्रह नहीं है अपितु यह हमारे विद्यालय जीवन का दर्पण है, जिसमें उत्साह और विषाद, हँसी मिश्रित अश्रु से युक्त भावनाएँ, उपलब्धियाँ और अपूर्ण स्वप्न, सभी एक साथ झलकते हैं।

एक सम्पादिका के रूप में यह यात्रा मेरे लिए मात्र एक उत्तरदायित्व नहीं, अपितु आत्मीयता और आत्मविश्लेषण से पूर्ण यात्रा भी रही है। इस पत्रिका ने मुझे न केवल अपने साथियों की सोच को समझने का अवसर दिया, बल्कि अपने भीतर की कई अव्यक्त अनुभूतियों को भी शब्द देने का साहस दिया।

पूर्व में हम क्षितिज का अंक प्रकाशित नहीं कर पाए थे किन्तु विद्यालय आते ही जब हमें क्षितिज को पुनः प्रकाशित करने का मौका मिला, तो इस क्षण मुझे अपार आनंद की अनुभूति हुई। अपने साथियों के विचारों को ध्यान में रखते हुए हमने इस अंक में अनेक भावनात्मक, गूढ़ और हृदयस्पर्शी लेख सम्मिलित करने का प्रयास किया है। हमें विश्वास है कि यह अंक न केवल आपके हृदय को आनंदित करेगा अपितु आपको उन अनुभूतियों से जोड़ पाएगा, जिन्हें आप भी अपने भीतर कहीं न कहीं अनुभव करते हैं।

मुख्य सम्पादिका
आशिया महाजन

इस अंक में आगे

- क्या आप योग्य है ?
- वसंत का संदेशवाहक: कचनार
- पेट्रोल से चलता इंटरनेट
- नींद और मैं
- सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग ?
- युद्ध और शांति
- हम पंछी वैल्हम परिसर के
- पदोन्नत
- नवागत सदस्य
- एक मुलाकात
- स्मारिका 2025

मेरे परीक्षा में पूरे अंक क्यों नहीं आए? "अरे! मैं इस प्रतियोगिता में प्रथम क्यों नहीं आ सकी?" मैं इस कार्य को करने में क्यों असमर्थ हूँ? लगता है मुझमें ही कोई कमी है! क्या आपने भी कभी अपने अंतर्मन की इस प्रकार की निराशाजनक आवाजें सुनी हैं? यह प्रश्न आत्ममंथन का द्वार खोलता है और आत्मविश्वास की नींव रखता है। जब हम इस प्रश्न को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो यह केवल संदेह नहीं, बल्कि आत्मविकास का आरंभ बन जाता है। मैं कुछ वर्ष पूर्व ही इन विचारों का शिकार बन चुकी हूँ, किसी और के कारण नहीं अपितु स्वयं के ही कारण। मैं स्वयं के आत्मविश्वास पर संदेह कर रही थी जबकि मेरे माता-पिता मेरे मित्र और मेरे गुरुजन मुझे हौसला देना चाहते थे। मैं उस समय भूल गई थी कि मैं कौन हूँ? मेरे अंदर का आत्मविश्वास डगमगा रहा था। समाज के समक्ष योग्यता का प्रदर्शन करने में मैं स्वयं से क्या अपेक्षा करती थी, यह भी भूल गयी। मुझे यह समझने में बहुत समय लगा कि मेरे पास एक आंतरिक शक्ति है जिससे मैं अयोग्यता की बुरी भावनाओं को दूर कर सकती थी। मैं यह भी भूल गयी थी कि मैं मूल्यवान हूँ और सम्मान की पात्र भी, भले ही मैंने कई बार असफलता का मुँह क्यों न देखा हो। स्वयं को अक्षम मानने वाले प्रत्येक उस व्यक्ति को मैं यही कहना चाहूँगी कि केवल सफलता अथवा उपलब्धियों के समय ही नहीं बल्कि असफलताओं और गलतियों के समय भी खुद को योग्य ही समझना चाहिए। आप अद्वितीय हैं और आपकी उपस्थिति इस संसार में सुंदरता जोड़ती है। समाज की अपेक्षाओं के अनुसार स्वयं को परिवर्तित कर आप सदैव प्रसन्न नहीं रह सकते। समय बदलने के साथ-साथ लोगों की आपके प्रति भावना भी बदल जाती है। यह सदैव ध्यान रखना है कि आपकी खुशी समाज की खुशी से बढ़कर है क्योंकि जब आप खुश रहेंगे तब ही समाज भी आगे बढ़ सकेगा।

इसलिए, जब अगली बार आप स्वयं से पूछें "क्या मैं योग्य हूँ?" तो उत्तर दीजिए "हाँ, मैं योग्य हूँ, क्योंकि मैं सीख रही हूँ, मेहनत कर रही हूँ और आगे बढ़ रही हूँ।" योग्यता कोई पुरस्कार नहीं, बल्कि एक यात्रा है जो प्रयासों, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच से तय होती है। तो अब समय आ गया है खुद को हीन समझने का नहीं, अपितु निरंतर आगे बढ़ने का और अपने सपने को संवारने का क्योंकि जब हम अपनी राह खुद चुनते हैं, तभी दुनिया हमारे पीछे चलती है और समाज के लिए अपना योगदान दे सकते हैं।

अक्षिता शर्मा
(SC)

वसंत का संदेशवाहक: कचनार

अथर्ववेद का एक मंत्र है "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"

अर्थात् भूमि (पृथ्वी) हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। हम सब उसी पृथ्वी के अंश हैं।

वास्तव में यदि देखा जाए तो हर जीव का जीवन संघर्षमय है, फिर चाहे वह एक वृक्ष हो, मनुष्य हो अथवा कोई पशु। देखने में भले ही हम अलग हों, पर हमारी जीवनरेखा एक-सी है। जब हम एक समान राह पर चलते हैं, तो हम एक-दूसरे की भावनाओं को बिना कहे भी समझ जाते हैं।

मुझे आज भी याद है, जब मैंने पहली बार वैल्हम के प्रांगण में कदम रखा था तब सबसे पहले मेरी दृष्टि गुलाबी पुष्पों से सम्पूर्ण परिसर को खुशनुमा बनाने वाले एक अत्यंत मनमोहक वृक्ष पर रुक गई और मेरा मन कौतूहल से भर गया। मैं उस वृक्ष के विषय में सब कुछ जानने के लिए आतुर हो गई। यह वृक्ष था- हमारे परिसर में शोभायमान कचनार का वृक्ष।

कचनार का पेड़ भारतीय साहित्य, विशेषकर संस्कृत साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे प्रेम और सौंदर्य का प्रतीक भी माना जाता है। वासंती दुपहरी में कचनार के वृक्ष को पुष्पित होते हुए देखा जा सकता है। मधुऋतु का यह मनहर पुष्प पतझड़ में धरती को सारे पत्ते न्योछावर कर नूतन किसलयों की परवाह किए बिना बसंतागमन के पूर्व ही खिलखिला कर हँसने लगता है। वसंत का इसे सहचर कहें या अग्रसर! वन-उपवन में इसका खिलखिलाना किसी को नागवार भले ही लगे, किंतु यह मनभावन वृक्ष पुष्पित हो कर अपने कर्तव्य को निभाकर मन को प्रफुल्लित कर ही देता है। दूसरी ओर, अन्य पुष्पों को भी खिलने को प्रेरित करता है। इस प्रकार, सबको प्रमुदित कर अपना अनुसरण करने को मानो बाध्य कर देता है।

जब मैंने उसकी यात्रा को पढ़ा, तो हैरान रह गई कि इस वृक्ष की कहानी हमारी अपनी यात्रा से कितनी मिलती-जुलती है। बीज बोने के बाद कचनार को अपनी जड़ों को मजबूत करने में लगभग एक वर्ष का समय लगता है। इस दौरान इसकी वृद्धि बहुत धीमी होती है। ठीक वैसे ही जैसे जब हम कोई नई चीज़ सीखते हैं तो शुरुआत में हमारी गति भी धीमी ही होती है। हमें भी समय लगता है खुद को जमाने में। दो वर्षों के बाद कचनार तेजी से बढ़ता है। उसके पेड़ों पर दिल के आकार की पत्तियाँ उगने लगती हैं मानो वह अब अपने भावों को प्रकट कर रहा हो। मनुष्य भी जब किसी कार्य से जुड़ता है, तो उसे दिल से अपनाने में समय लगता है। प्रेम, श्रद्धा और लगाव यूँ ही नहीं आते, उन्हें पनपने के लिए वर्षों की साधना चाहिए।

फिर आता है तीसरा वर्ष। वसंत के संग कचनार की कलियाँ मुस्कराती हैं, बौर फूटते हैं और शीघ्र ही सफ़ेद-गुलाबी फूल अपनी सुंदरता बिखेरने लगते हैं। कुछ ऐसा ही हमारे साथ भी होता है। जब हम वर्षों तक किसी काम को निष्ठा और समर्पण से करते हैं, तब जाकर मेहनत रंग लाती है और हमारे जीवन में भी फूल खिलते हैं।

कुछ महीनों में ये फूल फल में बदलते हैं और फिर वे बीजों से भरपूर, स्वादिष्ट फल बन जाते हैं। चिड़ियाँ, गिलहरियाँ और दूसरे जीव इनका स्वाद चखते हैं और उसकी सराहना करते हैं। इस कचनार की तरह ही हमें भी विनम्र रहना है। प्रशंसा सुनकर ऊँचा नहीं उड़ना, बल्कि झुकना सीखना है। यह वृक्ष जैसे अपनी घनी छाँव में राहगीरों को राहत देता है, वैसे ही हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए जिससे यह दुनिया सच में सबके लिए "घर" बन सके।

यही तो है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सार, "एक धरती, एक परिवार।"

आर्या शर्मा
(AI)

मुझे इंटरनेट की नई विधा व्हाट्सएप पर विभिन्न मित्रों से अनेकानेक संदेश प्राप्त होते रहते हैं। एक दिन एक मित्र के नम्बर से मुझे संदेश प्राप्त हुआ- 'क्या आपके पास पेटिएम, गूगल पे या फोन पे है?'

मैंने शेखी बघारते हुए उत्तर प्रेषित किया - 'मेरे पास तो तीनों हैं।'

उधर से उत्तर आया- 'मुझे लगभग दो हजार का एक ऑनलाइन पेमेंट करना है। मैं आपको कल तक वापस कर दूंगी। अभी मेरा इंटरनेट नहीं चल रहा है।'

मैंने भी लिख दिया- 'ठीक है। हो जाएगा।' यह संदेश एक घनिष्ठ मित्र का था, इसलिए मैंने अधिक सोचे समझे बिना 'हाँ' कर दिया। यह तो मैंने पहले भी किया है। दो हजार रुपये कोई बड़ी राशि भी नहीं थी। किन्तु शीघ्र ही 'अभी मेरा इंटरनेट नहीं चल रहा है' इस वाक्य ने मेरा ध्यान आकृष्ट कर लिया। मुझे समझ आ गया कि यह धोखा है, इसलिए मैं सावधान हो गई।

लेकिन फिर मुझे खुरापात सूझी और मजा लेने के लिए मैंने भी पूछ लिया - 'आप कौन हैं? आपका नाम क्या है?'

उधर से मुझे एक नाम बताया गया, जो उस मित्र का नहीं था, जिसका वह नम्बर था। फिर भी मैंने मजे लेने के लिए उसको सन्देश भेजा- 'अच्छा! मैं आपको जानती हूँ। बताइए पैसे कैसे देने हैं?'

उसने उत्तर भेजा- 'एक पुस्तक खरीदनी है 1920 रुपये की। अभी कोड भेजती हूँ।'

मैंने कहा - 'पुस्तक कल शाम को ले लेना। ऐसी भी क्या जल्दी है?'

उसने कहा - 'अभी छूट पर मिल रही है। यह स्कीम केवल आज रात तक ही है।'

मैंने कहा - 'अच्छा! आपका इंटरनेट नहीं चल रहा है, तो यह व्हाट्सएप क्या पेट्रोल से चल रहा है या सीएनजी से?'

इसके बाद मेरे ऊपर जो अपशिशु भाषा का प्रयोग हुआ वो तो कहना भी उचित नहीं है।

अंत में मैंने उस नम्बर वाले अपने घनिष्ठ मित्र को ईमेल करके पूछा कि क्या उसने ऐसा संदेश भेजा था? उसने बताया कि किसी ने उसका व्हाट्सएप हैक लिया है। वैसे तो उसको बताने की आवश्यकता नहीं थी। मैं यह बात पहले ही समझ चुकी थी कि उसका इंटरनेट पेट्रोल से चल रहा है।

युक्ति बेगानी (All)
अरुणिमा गोयल (All)

नींद और मैं

नींद और विद्यार्थी जीवन का अटूट नाता है। कक्षा में पढ़ते समय जब मन करता है, नींद बिना बुलाए ही आ जाती है, जैसे कोई पुराना दोस्त। जैसे ही पढ़ाई शुरू करती हूँ, नींद पूरी ताकत से हमला कर देती है। लंबी-लंबी उवासियाँ, भारी पलकें, किताब में से गायब होते अक्षर, और मन में उठता बस एक ही सवाल - "क्या जरूरी है इतना पढ़ना? दुनिया में बहुत सारे लोग बिना पढ़े भी तो खुश हैं।"

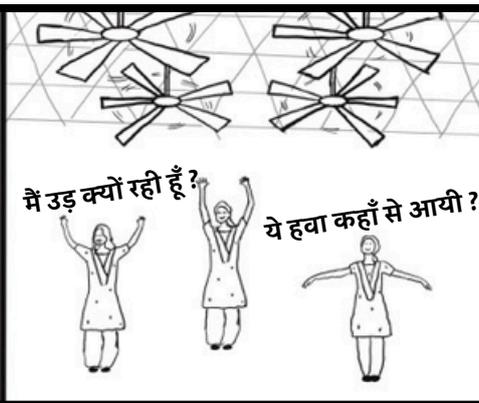
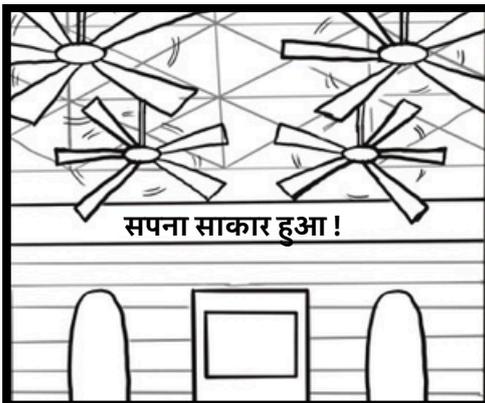
पुस्तकें खोलते ही लगता है कि नींद की देवी मेरे सिरहाने बैठ गई है। गणित के सवाल हल करते-करते सपनों में समीकरण हल करती रहती हूँ, और सुबह उठकर सोचती हूँ, "अरे, असली उत्तर कहाँ गया?" और तो और परीक्षा के दिनों में जैसे ही किताबें सामने आती हैं, तकिया मुझे दूर से लुभाता हुआ कहता है "आ जा मेरे दोस्त... थोड़ी देर सिर रख दे... बस पाँच मिनट!" लेकिन वे पाँच मिनट कब पाँच घंटे में बदल जाते हैं, इसका हिसाब सिर्फ नींद ही जानती है और नींद के साथ पढ़ाई का यह संघर्ष अनवरत चलता ही रहता है। पढ़ाई कहती है - "चलो मेहनत करो, भविष्य चमकाओ।" नींद कहती है - "चलो-चलो सो जाओ, सपनों में ही टॉप कर लो!" मुझे तो अनेक बार ऐसा लगता है जैसे नींद और किताब ने गुप्त समझौता कर रखा हो - "तू जैसे ही खुलेगी, वैसे ही मैं आऊँगी!" एक बार मैंने भी नींद से समझौता करने की कोशिश की और कहा "देखो बहन, कुछ दिन की बात है, परीक्षा के बाद मैं पूरी तरह तुम्हारी हूँ!"

नींद बोली - "माफ़ करना बहन! अब मैं रुठ गई हूँ। पेपर के दिन सुबह चार बजे ही सिरदर्द के साथ वापस आऊँगी!"

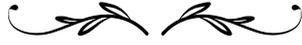
रविवार के दिन मैं नींद से कहती हूँ, "आज कोई रोक-टोक नहीं, खुलकर आना।" नींद इठलाकर जवाब देती है— "सोच लो जी! मुझे दूसरे लोगों के यहाँ भी जाना होता है" और यह परम सत्य है कि रविवार की सुबह अपने आप ही आँख खुल जाती है। मैं हर रात तय करती हूँ— "कल से अनुशासन का पालन करूँगी और नींद पर विजय प्राप्त करूँगी!" लेकिन नींद हर बार तय करती है— "कल मिलते हैं, उसी समय, उसी जगह।"

नींद मेरी सबसे अच्छी दोस्त भी है, और सबसे बड़ी विलेन भी, कभी जरूरत से ज्यादा आती है, कभी जरूरत पर भी नहीं आती। लेकिन फिर भी मेरे जीवन की सबसे सच्ची, प्यारी और निस्वार्थ दोस्त अगर कोई है, तो वो है मेरी नींद लेकिन अफसोस, दुनिया हमारी दोस्ती को कभी नहीं समझ पाई। नींद से मेरा रिश्ता सदैव बना रहेगा क्योंकि बाकी सब छूट सकता है पर नींद नहीं!

-नींद के लिए तरसती एक छात्रा



सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग ?



हम सब बचपन से सुनते आ रहे हैं और इसी बात की धमकी भी हमेशा से दी जाती रही है कि चार लोग क्या कहेंगे। "मैं कब से उन चार लोगों को खोज रही हूँ, जिनके बारे में माँ भी हमेशा कहती थी कि यह न करो वह करो वरना चार लोग क्या कहेंगे!

क्या यह सच नहीं है कि किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले हम अक्सर अपने विचारों और भावनाओं को एक तरफ रख देते हैं? हम ऐसा क्यों करते हैं? सिर्फ इसलिए कि हम विश्लेषण करना चाहते हैं कि हमारे कार्यों का अन्य लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? हम अक्सर ये बात भूल जाते हैं कि ये समाज हमारे संघर्षों के समय हमारे साथ नहीं खड़ा था, हमारा मनोबल ही होता है जो हमें लक्ष्य तक पहुँचाता है। सफलता के लिए हमें केवल आत्मविश्वास की ही आवश्यकता है।

अपने आप में इतना भरोसा करना चाहिए कि दुनिया का कोई भी व्यक्ति हमें स्वयं के निर्णय पर सन्देह करवाने की क्षमता न रख सके। आपके पीठ पीछे लोग केवल दो या तीन दिन तक बात करेंगे परंतु आप हर रोज शीशे में अपने आप से नज़र चुराते रहेंगे अगर आपने वो नहीं किया जो आपका हृदय चाहता था। आप कुछ भी करिए लोग आप को कुछ न कुछ कहेंगे अतः आप अपना काम अपने स्वविवेक से करिये। आप जो करना चाहते हैं आज ही करिए यह मत सोचिए कि लोग क्या कहेंगे लोग तो तब भी कहेंगे जब आप कुछ नहीं करेंगे और व्यवहार में सदैव अपने स्वविवेक से काम लीजिए। हम क्या करना चाहते हैं, यह हमारा निर्णय होना चाहिए। खुश रहें औरों को भी खुश रहने दें, और मिटा दें इस रोग को कि क्या कहेंगे लोग?

किसी कवि ने सत्य ही कहा है-

क्या कहेंगे लोग, कहने को बचा ही क्या?

यदि नहीं रचा कुछ हमने, तो उन्होंने भी रचा ही क्या?

उंगलियाँ हम पर उठाये कहे तो कहते रहें वे,

परखने में आज तक, उनको जँचा ही क्या?

समाइरा भाटिया
(presc)

युद्ध और शांति



मनुष्य का इतिहास युद्ध और शांति के बीच झूलता रहा है। जहाँ एक ओर युद्ध विनाश, पीड़ा और स्तूपता का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर शांति प्रेम, सह-अस्तित्व और विकास का मार्ग दिखाती है। आज के समय में जब विश्व के कई हिस्से संघर्षों से जूझ रहे हैं, यह विषय पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। इतिहास गवाह है कि प्रथम विश्व युद्ध हो या द्वितीय विश्व युद्ध, स्थायी समाधान किसी ने नहीं दिया। शांति का अर्थ केवल युद्ध न होना नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जिसमें सभी को समान अवसर मिले और समस्याओं का हल संवाद और समझदारी से हो। शांति की बात करना सरल है, परंतु जब शांति के नाम पर अन्याय सहना पड़ता है, तो वह शांति नहीं, सहनशीलता की परीक्षा बन जाती है। यदि कोई बारम्बार आपको चोट पहुँचाए, और आप फिर भी शांत रहें तो क्या वह शांति है और कायरता?

पिछले दिनों कश्मीर की सुरम्य वादियों में जो घटना घटित हुई, उसने न केवल मानवता को झकझोर दिया, अपितु स्वयं प्रकृति की निःशब्दता को भी करुण क्रंदन में परिवर्तित कर दिया। पहलगाम जैसे शांतिपूर्ण पर्यटन स्थल पर निर्दोषों पर जो विनाशकारी अत्याचार हुआ, वह केवल गोलियों की गूँज नहीं थी, बल्कि सभ्यता की आत्मा पर एक गहरा आघात था। कई बार छोटी-छोटी उथल-पुथल को नज़रअंदाज़ कर हम आगे बढ़ते हैं, यह सोचकर कि यह समय नहीं है बोलने का, यह क्षण नहीं है प्रतिक्रिया देने का। किन्तु यह मौन केवल हमारे भीतर की आग को और सुलगती है। हमें यह समझना होगा कि शांति का मार्ग मौन से नहीं, बल्कि न्याय से होकर गुजरता है। यह सही है कि युद्ध संसाधनों की हानि और विनाश का कारण बनता है। परंतु जब बार-बार की चोटें बिना उत्तर के रह जाएँ, तो परिणाम और अधिक गंभीर हो सकते हैं।

युद्ध के कई कारण होते हैं: राजनीतिक संघर्ष, सीमाओं के विवाद, शक्ति की होड़, धार्मिक या सांस्कृतिक मतभेद अथवा आज़ादी का संघर्ष किन्तु युद्ध केवल तब भयावह होता है जब उसका उद्देश्य नफ़रत हो; यदि युद्ध का उद्देश्य न्याय हो, तो वह संघर्ष सिर्फ़ हिंसा नहीं अपितु एक चेतावनी होती है कि बस अब और नहीं। महात्मा गाँधी, नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जैसे महान नेताओं ने दुनिया को दिखाया कि बिना हथियार उठाए भी दुनिया बदली जा सकती है।

सच्चा साहस युद्ध रोकने में है, न कि युद्ध लड़ने में। शक्ति से डराया जा सकता है किन्तु शांति की बुद्धिमत्ता से दिल जीते जाते हैं। शांति का सम्मान तभी तक संभव है, जब वह एकतरफा त्याग न बन जाए। हर बार अगर हम ही झुकते रहें, तो क्या सामने वाला कभी रुकने की सोच भी पाएगा? युद्ध कुछ क्षणों के लिए जीत दिला सकता है, पर शांति पूरे जीवन को सुकून दे सकती है। युद्ध शक्ति है, पर शांति सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता। सुप्रसिद्ध कवियत्री महादेवी वर्मा के शब्दों में -

"अब नहीं युद्ध का गान,
अब शांति की वंशी बहे।
अब प्रेम की हो विजय,
अब द्वेष का तम मिटे।"



मेधा नौटियाल
(AI)

नीले गगन की रानी हूँ मैं,
पंखों में आसमानी हूँ मैं।
बँधनों को जो तोड़ चले,
उस उड़ान की कहानी हूँ मैं।

जब-जब कोई बाँधने आया,
मैंने खुद को और ऊँचा पाया।
आज़ाद हवा की मैं साथी,
मैं नहीं किसी से घबराती।
उड़ती हूँ मैं, बताती हूँ,
सच में जीना क्या होता है।
पिंजरे के बाहर खुल कर
रहना क्या होता है।

ए चिड़िया! तू सिखा दे हमें,
आज़ादी का मतलब सच्चा।
जहाँ हो खुले सपनों की उड़ान,
और दिल हो बिल्कुल बच्चा।

अक्षिता
(BII)

आज़ादी की भाषा चिड़िया समझती है,
पंख फैलाकर नभ में वह उड़ती है।
न मानचित्र देखे, न सरहद को जाने,
गुनगुनाती रहती है बहती हवा से।
वो गाती है जीवन, बिना किसी शोक।

आज़ादी की भाषा चिड़िया जानती है,
हर उड़ान को वह गीतों से बाँधती है।
तू भी सुन, तू भी समझ, तू भी पहचान,
तेरे भीतर भी है आज़ाद उड़ान।

उन्नति
(BI)

नीले गगन की खुली किताब में,
चिड़िया लिखती नई उड़ान,
न कोई सीमा, न कोई सरहद
उसका तो है केवल आसमान।
जब-जब मन को पाओ पिंजरे में,
याद करो उसकी उड़ान;
खुद के भीतर जितनी जगह है,
उतना ही है आसमान।
चलो, सीखें हम चिड़िया से,
उसकी एक दृढ़ पुकार
जहाँ न भय हो, न कोई हो सीमा,
वही है सारा आकाश।

मान्या पाठक
(AIII)

चहचहाती चिड़िया देती सुंदर संदेश,
मन में भरती उम्मीद, देती खुशियाँ अनेक।
कहती-"मत डर तू मुश्किल से, उड़ना तुझे है,
हर तूफान के पीछे छुपा, एक सुनहरा कल है।"
"पंख छोटे हों तो क्या, हौसला बड़ा रखो,
आसमान खुद कहेगा, अब तुम आगे बढ़ो!"
"मिलजुल कर रहो सभी, प्रेम की बोली बोलो,
नफरत के इस अंधकार में, आशा का दीप तुम बनो।"
उड़ती जाती दूर क्षितिज में, फिर भी गीत है गाती,
चिड़िया का संदेश है - "मत बनो बस दर्शक,
बनो सबके साथी!"

आद्या
(AI)

अरे देखो ! मानवजाति का इस धरती पर अत्याचार
कैसे हम लोगों ने मचाया हाहाकार ।
कैसे काटकर घर पशुओं का, खड़े किये घर हमारे,
कैसे बेघर हो गए, पशु-पक्षी सारे के सारे।

अरे देखो ! इन मनुष्यों का धरती माँ पर अत्याचार,
भला करने चले थे, बला खड़ी कर दी,
गंगा माँ को न छोड़ा, हवा कैसे छूटती,
धरती को देखो या देखो आसमान को,
प्रदूषण ही प्रदूषण है जगह- जगह,
अब बताओ कैसे होगी सुहानी हर सुबह ?

मानव- मानव का शत्रु है,
प्रकृति ही अपनी मित्र बंधु है,
परन्तु कैसे बचेगी हमारी मित्र भी,
अगर मानव ने न रोका अत्याचार अभी।

अरे रुक जाओ प्रिय मानव, न मारो अपने मित्र को
अरे रोको मानवजाति को करने से यह अत्याचार,
प्रकृति, धरती माँ को बचाओ बारम्बार !
क्योंकि प्रकृति परिवर्तनशील है और
मनुष्य प्रकृति के बिना कुछ नहीं,
बस प्रकृति मित्र, और धरती माँ हमारी।

आर्ना अग्रवाल
(AIII)



पदोन्नत



श्रीमती सुबोहि राशिद
उपप्रधानाचार्या



श्रीमती अनुराधा बावा
सीनियर स्कूल डीन



डॉ. नालंदा पांडे
जूनियर स्कूल डीन



श्रीमती नूतन चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग



श्रीमती भावना अरोड़ा
विज्ञान विभाग



श्रीमती सुरभि जॉली
पुस्तकालय



श्री आदित्य सलूजा
रोबोटिक्स

नवागत सदस्य

क्षितिज की ओर से आप सभी को पदोन्नति की हार्दिक शुभकामनाएँ

क्षितिज की ओर से आपका वैल्हम परिवार में हार्दिक स्वागत है !

एक मुलाकात

पिछले दिनों फ्लोरिडा से श्री ग्रेग हमारे विद्यालय में भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान के नवीन तथ्य जूनियर स्कूल के विद्यार्थियों को समझाने आए और वैल्हम परिवार का अभिन्न हिस्सा बन गए। एक सप्ताह हम सबने उनके साथ बिताया बहुत कुछ सीखा और ढेर सारी नई यादें बना लीं। यह समय हमारे लिए बहुत ही यादगार रहा। प्रस्तुत है उनसे हमारी बातचीत के कुछ अंश-

आशिया : सर, आपका हमारे विद्यालय में अनुभव कैसा रहा?

श्री ग्रेग : यहाँ आकर मुझे बेहद आनंद आया। प्रत्येक छात्रा यहाँ कुछ न कुछ नया सोच रही है, कुछ नया सीख रही है। बच्चों के विचार सुनकर और उनकी ऊर्जा महसूस करके मैंने भी बहुत कुछ नया सीखा। मुझे हर पल यहाँ अपनापन महसूस हुआ। यहाँ मैंने देखा कि प्रत्येक छात्रा व्यस्त रहने के बाद भी बेहद खुश है और उनका जीवन बहुत सादा है।

आशिया: आपके लिए विद्यालय का सबसे यादगार पल कौन सा रहा?

श्री ग्रेग: यहाँ जिस प्रकार सभी मेरा स्वागत करते हैं और मेरा अभिवादन करते हैं, वह पल मुझे सबसे अच्छा लगता है। जब प्रत्येक छात्रा मुझे नमस्ते करती है तो मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। इतने सम्मान और अपनेपन का अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया। यह पल मेरी स्मृतियों में सदैव रहेगा। मुझे दिन का भोजन करने में भी सबसे अधिक आनन्द आता था जहाँ बातचीत के साथ सभी चटपटे व्यंजनों का आनंद लेते हैं और "बैराजी" बहुत ही प्रेम से सभी को भोजन करवाते हैं।

आशिया: हम सभी को आप क्या सन्देश देना चाहेंगे?

श्री ग्रेग : मैं हमेशा से ही भारतीय संस्कृति का बहुत प्रशंसक रहा हूँ यहाँ आकर मुझे भारतीय संस्कृति के दर्शन हुए मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि आप सभी के पास जो अद्भुत ज्ञान है और जो सांस्कृतिक मूल्य हैं वे सभी बहुत ही प्रेरणादायक हैं। अपनी जड़ों से जुड़े रहो, सीखने की इस इच्छा शक्ति को कभी समाप्त न होने दो और आगे ही आगे बढ़ते रहो।



स्मारिका 2025

वैसे तो हमारे विद्यालय में अनेकानेक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है किन्तु सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिता है-"वार्षिक हिंदी एवं अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।" वैल्हम गर्ल्स स्कूल ने 18-20 अप्रैल 2025 को सरोज श्रीवास्तव एवं मिस लिनेल अंतर्विद्यालयी हिंदी एवं अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस वाद विवाद प्रतियोगिता में 11 विद्यालयों ने भाग लिया और इस प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय ने हिन्दी वाद-विवाद में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था, "चिंता विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।" जिसे सभी ने बहुत सराहा।

संपादक मंडल

मुख्य सम्पादिका

आशिया महाजन

सह सम्पादिका

अक्षिता शर्मा

सहायक मण्डल

चित्रकार

नभ्या शेखर
नविका जिंदल
माही मिरानी
आद्या
पावनी महेंद्र
युक्ति बेगानी

श्रेया अग्रवाल
धनश्री भूपाल
प्रभारी शिक्षिका
डॉ. ऋतु पाठक

तकनीकी सहायक

राजवी बनिक



अंतर्मन में भरी हो ऊर्जा, नई शक्ति का हो संचार,
डटकर, चुनौतियों से लड़कर, जीतेंगे सारा संसार।
लें संकल्प सृजन का मन में, उम्मीदों से हो भरपूर,
धुन के पक्के उस राही से, मंज़िल है फिर कितनी दूरा
जगें ज्ञान और प्रेम धरा पर, गूँजे कुछ ऐसा सन्देश,
नई चेतना से जागृत हो, सुप्त पड़ा यह मेरा देश।
"क्षितिज परिवार"